गद्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न (प्रत्येक 1 अंक)

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्पों में से चुनकर लिखिए—

1. भारतीय संस्कृति संसार की सबसे पुरानी संस्कृतियों में से एक है। इसके प्राचीनतम अवशेष सिंधु घाटी में आज भी विद्यमान हैं। विद्वानों के अनुसार सिंधु घाटी की सभ्यता प्रायः पाँच हजार साल पुरानी है। लगभग उसी समय चीन, यूनान एवं नील की घाटी में मानव-सभ्यताएँ काफी विकसित अवस्था में थीं, लेकिन आज के चीन या यूनान अथवा मिस्र में उनका मात्र ऐतिहासिक महत्व है, क्योंकि उन देशों का आज का जीवन उन प्राचीन सभ्यताओं के जीवन से एकदम भिन्न है। इसके विपरीत भारत में आज भी यहाँ के प्राचीनतम ग्रंथों का अध्ययन-अध्यापन होता है तथा आज के जीवन पर भी उनका प्रभाव देखा जा सकता है। आधुनिक काल में आर्य समाज ने वेदों के आधार पर ही भारतीय समाज के पुनर्निर्माण की कल्पना की। इस प्रकार आज के अनेक भारतीय चिंतकों और समाज-सुधारकों पर उपनिषद्, गीता, वेदान्त, जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। भारतीय संस्कृति की इस विकासशीलता और निरंतरता के कारण यह अनेक विदेशी विद्वानों के आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है। **(Board Term II, 2014 KVS)**

1

(i) भारतीय संस्कृति के प्राचीनतम अवशेष आज भी कहाँ विद्यमान हैं?

(क) नील घाटी। (ख) सिंधु घाटी। (ग) चीन। (घ) यूनान।

उत्तर : (ख) सिंधु घाटी। 1

(ii) सिंधु घाटी की सभ्यता की समकालीन सभ्यता नहीं है :

(क) चीन की सभ्यता। (ख) यूरोप की सभ्यता। (ग) यूनान की सभ्यता। (घ) मिस्र की सभ्यता।

उत्तर : (ख) यूरोप की सभ्यता। 1

(iii) भारतीय संस्कृति अनेक विदेशी विद्वानों के आकर्षण का केन्द्र रही है :

(क) संसार की प्राचीनतम संस्कृति होने के कारण। (ख) अपनी विकासशीलता और निरंतरता के कारण।

(ग) अपनी समन्वयात्मक दृष्टि के कारण। (घ) अपनी विविधता और विशालता के कारण।

उत्तर : (ख) अपनी विकासशीलता और निरंतरता के कारण। 1

(iv) 'समाज' शब्द से बनने वाला विशेषण है :

(क) सामाजिकता। (ख) सामान्यता। (ग) सामाजिक। (घ) समाजी।

उत्तर : (ग) सामाजिक। 1

(v) 'प्राचीनतम' शब्द का विपरीतार्थक शब्द है :

(क) नवीनतम। (ख) नवीनता। (ग) नवीन। (घ) आधुनिक।

उत्तर : (क) नवीनतम।

2. संसार की दो अचूक शक्तियाँ हैं-वाणी और कर्म। कुछ लोग वचन से संसार को राह दिखाते हैं और कुछ लोग कर्म से। शब्द और आचार, दोनों ही शक्तियाँ हैं। शब्द की महिमा अपार है। विश्व में साहित्य, कला, विज्ञान, शास्त्र शब्द-शक्ति के प्रतीक प्रमाण हैं; पर कोरे शब्द व्यर्थ होते हैं जिनका आचरण न हो। कर्म के बिना वचन, व्यवहार के बिना सिद्धांत की कोई सार्थकता नहीं है। निःसंदेह शब्द-शक्ति महान है पर चिरस्थायी और सनातनी शक्ति तो व्यवहार ही है। महात्मा गाँधी ने इन दोनों की कठिन और अद्भुत साधना की थी। महात्मा जी का सम्पूर्ण जीवन इन्हीं दोनों से युक्त था। वे वाणी और व्यवहार में एक थे। जो कहते थे, वही करते थे। यही उनकी महानता का रहस्य है। **(Board Term II, 2014 KVS)**

(i) प्रायः सज्जन व्यक्ति संसार को राह दिखाते हैं :

(क) अपनी कार्यकुशलता से। (ख) अपने कर्म एवं वाणी से। (ग) अपनी सेवा-भावना से। (घ) सहायता की भावना से। 1

उत्तर : (ख) अपने कर्म एवं वाणी से।

(ii) जगत में साहित्य, कला, विज्ञान और शास्त्र :

(क) शब्द-शक्ति के प्रमाण हैं। (ख) शब्द-शक्ति का ज्ञान कराते हैं। 1

(ग) शब्द-शक्ति से कोई सम्बन्ध नहीं रखते। (घ) शब्द-शक्ति से अलग नहीं हैं।

उत्तर : (क) शब्द-शक्ति के प्रमाण हैं।

(iii) शब्द-शक्ति के महान होते हुए भी :

(क) व्यवहार एक चिरस्थायी एवं सनातनी शक्ति है। (ख) व्यवहार भी शक्तिशाली है। 1

(ग) व्यवहार एवं शब्द-शक्ति दोनों महान हैं। (घ) व्यवहार प्रभावहीन है।

उत्तर : (क) व्यवहार एक चिरस्थायी एवं सनातनी शक्ति है।

(iv) गाँधी जी की महानता थी कि वे :

(क) सदैव सत्य का सहारा लेते थे। (ख) गरीबों का मदद करते थे। 1

(ग) हिंसा नहीं करते थे। (घ) जो कहते थे, वही करते थे।

उत्तर : (घ) जो कहते थे, वही करते थे।

(v) उपर्युक्त गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक है :

(क) गाँधी जी और उनका धर्म। (ख) वाणी और कर्म। (ग) शब्दों का महत्व। (घ) साहित्य और कला। 1

उत्तर : (ख) वाणी और कर्म।